

## दशवें स्कन्ध का सारांश

इस दशवें स्कन्ध के प्रत्येक अध्याय का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है : प्रथम अध्याय में ६९ श्लोक हैं। इसमें भगवान् कृष्ण द्वारा अवतार लेने के बारे में जानने की महाराज परीक्षित की उत्सुकता तथा कंस द्वारा देवकी की आठवीं संतान से मारे जाने के भय से उसके छह पुत्रों के वध का वर्णन हुआ है। दूसरे अध्याय में ४२ श्लोक हैं। इसमें कंस को मारने के लिए भगवान् कृष्ण का देवकी के गर्भ में प्रवेश करने का उल्लेख हुआ है। जब भगवान् कृष्ण देवकी के गर्भ में थे तो ब्रह्मा आदि सारे देवताओं ने उनकी स्तुति की। तीसरे अध्याय में ५३ श्लोक हैं। इसमें भगवान् के यथारूप आविर्भाव का वर्णन हुआ है। भगवान् के माता-पिता ने यह जानकर कि भगवान् प्रकट हो रहे हैं उनकी स्तुति की। कंस के भय से भगवान् के पिता इस शिशु को मथुरा से गोकुल वृन्दावन ले गये। चौथे अध्याय में ४६ श्लोक हैं जिसमें देवी चण्डिका की भविष्यवाणी दी गई है। अपने असुर मित्रों से परामर्श करके कंस उस समय उत्पन्न सारे बच्चों को मारने लगा क्योंकि उसने सोचा कि इससे उसे लाभ हो सकता है।

पाँचवें अध्याय में ३२ श्लोक हैं। इसमें नन्द महाराज द्वारा कृष्ण के जन्मोत्सव मनाने तथा उनके मथुरा जाने का वर्णन हुआ है जहाँ वसुदेव से उनकी भेंट हुई। छठे अध्याय में ४४ श्लोक हैं। इसमें नन्द महाराज अपने मित्र वसुदेव की सलाह मानकर गोकुल लौट आते हैं। रास्ते में वे पूतना के मृत शरीर को देखते हैं और यह जानकर आश्चर्यचकित होते हैं कि इसका वध कृष्ण ने किया है। सातवें अध्याय में ३७ श्लोक हैं। इसमें महाराज परीक्षित द्वारा भगवान् कृष्ण की बाल लीलाओं के विषय में सुनने की उत्कण्ठा का वर्णन है। इसमें कृष्ण द्वारा शकटासुर तथा तृणासुर का वध और अपने मुख के भीतर सम्पूर्ण विश्व दिखलाने का उल्लेख है। आठवें अध्याय में ५२ श्लोक हैं। इसमें गर्गमुनि द्वारा कृष्ण तथा बलराम के नामकरण संस्कार का तथा उनकी बालक्रीड़ाओं का वर्णन हुआ है कि वे किस तरह जमीन पर घुटनों के बल चलते, अपने छोटे-छोटे पाँवों से चलने का प्रयास करते, मक्खन चुराते तथा बर्तन-भांडे तोड़ते थे। इस अध्याय में विश्वरूप की झाँकी का भी वर्णन है।

नवें अध्याय में २३ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण द्वारा मक्खन के लिए दही मथती अपनी माता को तंग करने का वर्णन हुआ है। कृष्ण की माता आग पर उबलते दूध को देखने के लिए कृष्ण को छोड़ कर चली गई थी और उन्हें अपना दूध नहीं पिला रही थीं। इससे कृष्ण बहुत क्रुद्ध थे और उन्होंने दही की

मटकी तोड़ डाली। उद्वण्ड बालक को दण्ड देने के लिए माता यशोदा ने रस्सी से उन्हें बाँधना चाहा, किन्तु गाँठ देते समय रस्सी छोटी पड़ जाने से वे उन्हें बाँध न पाई। दशवें अध्याय में ४३ श्लोक हैं। इसमें वर्णन हुआ है कि दामोदर कृष्ण ने किस तरह जुड़वाँ यमलार्जुन वृक्षों को गिराया और किस तरह वृक्षों के भीतर के दोनों देवताओं का उद्धार कृष्ण की कृपा से हुआ। ग्यारहवें अध्याय में ५९ श्लोक हैं। इस अध्याय में बतलाया गया है कि किस तरह नन्द महाराज ने कृष्ण की रस्सियाँ खोलीं, किस तरह कृष्ण ने फल बेचने वाले को फल के बदले अनाज लेते समय कृपा की और किस तरह नन्द महाराज तथा अन्य ग्वालों ने गोकुल छोड़कर वृन्दावन जाने का निश्चय किया जहाँ कृष्ण ने वत्सासुर तथा बकासुर का वध किया।

बारहवें अध्याय में ४४ श्लोक हैं। इसमें जंगल में ग्वालबालों के साथ कृष्ण की लीलाओं का तथा अघासुर-वध का वर्णन हुआ है। तेरहवें अध्याय में ६४ श्लोक हैं जिनमें बतलाया गया है कि ब्रह्मा ने किस तरह कृष्ण के बछड़ों को तथा उनके ग्वाल-मित्रों को चुरा लिया। कृष्ण ने एक वर्ष तक अपनी लीलाओं का विस्तार किया और अपने को बछड़ों तथा बालकों के सही रूपों में प्रकट किए रखा। इस तरह ब्रह्मा चकरा गये और अन्त में जब उन्होंने कृष्ण की शरण ग्रहण की तो यह मोह समाप्त हुआ। चौदहवें अध्याय में ६१ श्लोक हैं। इस अध्याय में यह अच्छी तरह जान लेने पर कि कृष्ण भगवान् हैं, ब्रह्मा उनकी स्तुति करते हैं। पन्द्रहवें अध्याय में ५२ श्लोक हैं। इस अध्याय में बलराम के साथ कृष्ण का तालवन में प्रवेश, बलराम द्वारा धेनुकासुर का वध तथा कालिय के विष से ग्वालों तथा गौवों की कृष्ण द्वारा रक्षा किये जाने का वर्णन मिलता है।

सोलहवें अध्याय में ६७ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण द्वारा कालिय को दण्ड दिये जाने तथा कालिय की पत्नियों द्वारा कृष्ण की स्तुति किये जाने का वर्णन हुआ है। सत्रहवें अध्याय में २५ श्लोक हैं। इस अध्याय में बतलाया गया है कि कालिय ने नागालय नामक द्वीप के अपने वासस्थान को (जो फिजी द्वीपसमूह है) त्यागकर यमुना नदी में क्यों प्रवेश किया, किस तरह गरुड़ को सौभरि ऋषि ने शाप दिया, किस तरह कृष्ण के मित्र ग्वालबालों को यमुना से कृष्ण के प्रकट होने पर जीवनदान मिला और किस तरह कृष्ण ने ब्रज के सो रहे वासियों की दावानल रोक कर रक्षा की।

अठारहवें अध्याय में ३२ श्लोक हैं जिनमें कृष्ण तथा बलराम का वन-भ्रमण, वृन्दावन में ग्रीष्म

तथा वसन्तऋतु का वर्णन तथा बलराम द्वारा प्रलम्बासुर के वध किये जाने का वर्णन मिलता है। उन्नीसवें अध्याय में १६ श्लोक हैं जिनमें कृष्ण द्वारा मुञ्जारण्य नामक वन में प्रवेश, ग्वालों तथा गौवों को दावानल से बचाने और उन्हें भाण्डीरवन लाने का वर्णन मिलता है। अध्याय बीस में ४९ श्लोक हैं। इसमें वर्षाऋतु में ग्वालबालों के साथ बलराम तथा कृष्ण द्वारा जंगल में आनन्द मनाने का वर्णन है। इसमें वर्षाऋतु तथा शरद की उपमाओं के माध्यम से अनेक उपदेश दिये गये हैं।

इक्कीसवें अध्याय में २० श्लोक हैं जिसमें कृष्ण द्वारा शरत् ऋतु में वृन्दावन के जंगलों में जाकर बाँसुरी बजाने तथा उनका गुणगान करने वाली गोपियों को आकृष्ट करने का वर्णन है। बाइसवें अध्याय में ३८ श्लोक हैं। इनमें बतलाया गया है कि किस तरह गोपियों ने कृष्ण को पति रूप में पाने के लिए देवी कात्यायनी से प्रार्थना की और बाद में किस तरह कृष्ण ने यमुना में स्नान करती गोपियों का चीर हरण किया। तेइसवें अध्याय में ५२ श्लोक हैं जिनमें भूखे ग्वालबालों द्वारा कृष्ण के आदेशानुसार यज्ञ कर रहे ब्राह्मणों के पास जाकर उनके लिए तथा अपने लिए भोजन माँगने का वर्णन है। उन ब्राह्मणों ने ग्वालबालों द्वारा माँगे जाने पर भी कृष्ण तथा बलराम के लिए भोजन नहीं दिया, किन्तु उनकी पत्नियों भोजन देने के लिए तैयार हो गईं अतएव कृष्ण ने उन्हें अपनी कृपा प्रदान की।

चौबीसवें अध्याय में ३८ श्लोक हैं। इसमें वर्णन हुआ है कि किस तरह कृष्ण ने इन्द्र-यज्ञ रोककर उसके स्थान पर गोवर्धन पूजा करके राजा इन्द्र के प्रतिष्ठापूर्ण पद के बावजूद उनका तिरस्कार किया। पच्चीसवें अध्याय में ३३ श्लोक हैं। इसमें बतलाया गया है कि इन्द्र-यज्ञ बन्द किये जाने से इन्द्र अत्यन्त कुपित हुआ और वृन्दावन और ब्रज के वासियों को मार डालने के लिए उसने सारे क्षेत्र को वर्षा-जल से आप्लावित कर दिया। किन्तु कृष्ण ने राजा इन्द्र की चुनौती स्वीकार की और वृन्दावन तथा समस्त गौवों की रक्षा करने के लिए गोवर्धन पर्वत को छाते की तरह उठा लिया। छब्बीसवें अध्याय में २५ श्लोक हैं जिनमें कृष्ण के असाधारण कृत्यों को देखकर नन्द के आश्चर्य तथा उनके द्वारा ग्वालों से कृष्ण के ऐश्वर्य की गर्गमुनि द्वारा पूर्वकथित सारी कथा सुनाये जाने का वर्णन हुआ है। सत्ताइसवें अध्याय में २८ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण की असीम शक्ति को देखकर राजा इन्द्र द्वारा उनकी पूजा किये जाने का वर्णन हुआ है जिनका इन्द्र ने सुरभि के दूध से प्रक्षालन किया और वे तब से गोविन्द कहलाये। अट्ठाइसवें अध्याय में १७ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण द्वारा अपने पिता महाराज नन्द को

वरुण से छुड़ाकर लाये जाने तथा ग्वालबालों को वैकुण्ठलोक का दर्शन कराने का वर्णन हुआ है।

उन्तीसवें अध्याय में ४८ श्लोक हैं जिसमें रासलीला शुरू करने के पूर्व गोपियों से कृष्ण की वार्ता तथा रासलीला प्रारम्भ होने पर उस स्थान से कृष्ण के अदृश्य होने का वर्णन हुआ है। तीसवें अध्याय में ४४ श्लोक हैं। इसमें बतलाया गया है कि किस तरह गोपियाँ कृष्ण से विलग होने से पागल होकर उन्हें ढूँढने के लिए जंगल में घूमती रहीं। गोपियों की भेंट वृषभानुजा श्रीमती राधारानी से हुई और वे सब मिलकर यमुना तट पर कृष्ण को ढूँढती रहीं। इकतीसवें अध्याय में १९ श्लोक हैं जिसमें कृष्ण से मिलने के लिए वियुक्त गोपियों की प्रतीक्षा का वर्णन हुआ है। अध्याय बत्तीस में २२ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण गोपियों के मध्य प्रकट होते हैं और गोपियाँ उनके प्रेमभाव से पूर्ण तुष्ट हो जाती हैं। अध्याय तैंतीस में ३९ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण नाना वेशों में गोपियों के बीच प्रकट होते हैं और उनके साथ रास नृत्य करते हैं। तत्पश्चात् वे सभी यमुना नदी में स्नान करते हैं। इसी अध्याय में शुकदेवमुनि परीक्षित के मन में रासलीला विषयक उठने वाले सन्देहों को दूर करते हैं।

चौतीसवें अध्याय में ३२ श्लोक हैं। इस अध्याय में बतलाया गया है कि किस तरह कृष्ण के पिता नन्द एक अजगर द्वारा निगल लिये गये थे। यह अजगर विद्याधर नामक देवता था, किन्तु अंगिरा ऋषि ने इसे शाप दिया था। कृष्ण ने अपने पिता को बचाया तथा इस देवता को एकसाथ शापमुक्त किया। पैंतीसवें अध्याय में २६ श्लोक हैं जिसमें कृष्ण द्वारा गौवें लेकर चरागाहों में जाने और उनके वियोग में गोपियों के गीत का वर्णन हुआ है।

छत्तीसवें अध्याय में ४० श्लोक हैं। इसमें कृष्ण द्वारा अरिष्टासुर का वध तथा नारद द्वारा कंस से कृष्ण तथा राम का वसुदेव के पुत्र होने के रहस्योद्घाटन का वर्णन मिलता है। इस रहस्योद्घाटन के फलस्वरूप कंस इन दोनों को मारने की योजना बनाता है। वह अपने सहायक केशी को वृन्दावन भेजता है और बाद में राम तथा कृष्ण को मथुरा लाने के लिए अक्रूर को भेजता है। अध्याय सैंतीस में ३३ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण द्वारा केशी असुर के वध, कृष्ण की भावी लीलाओं का वर्णन करते हुए नारद द्वारा उनकी पूजा तथा कृष्ण द्वारा व्योमासुर-वध का वर्णन हुआ है। अड़तीसवें अध्याय में ४३ श्लोक हैं। इसमें अक्रूर का वृन्दावन-गमन एवं राम-कृष्ण तथा नन्द द्वारा उनके स्वागत का वर्णन हुआ है। उन्तालीसवें अध्याय में ५७ श्लोक हैं। इसमें कंस द्वारा आमंत्रित किये जाने पर राम तथा कृष्ण का

मथुरा के लिए प्रस्थान बताया गया है। जब वे रथ पर सवार हुए तो गोपियाँ बिलखने लगीं और कृष्ण ने उन्हें सान्त्वना देने के लिए अपना दूत भेजा। तभी वे मथुरा के लिए प्रस्थान कर पाये। रास्ते में अक्रूर को यमुना के जल के भीतर सम्पूर्ण विष्णुलोक का दर्शन हुआ।

चालीसवें अध्याय में ३० श्लोक हैं जिनमें अक्रूर द्वारा की गई स्तुतियों का वर्णन है। इकतालीसवें अध्याय में ५२ श्लोक हैं और इनमें राम तथा कृष्ण द्वारा मथुरापुरी में प्रवेश करने का वर्णन हुआ है। वहाँ की स्त्रियाँ इन दोनों भाइयों को देखकर अत्यधिक हर्षित थीं। कृष्ण ने एक धोबी को मारा, सुदामा का गुणगान किया और उसे वर दिया। बयालीसवें अध्याय में ३८ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण द्वारा कुब्जा-उद्धार तथा कंस के विशाल धनुष को तोड़ने और इसके संरक्षकों को मारने का वर्णन है। इस तरह कंस और कृष्ण की भेंट हुई। अध्याय तैंतालीस में ४० श्लोक हैं। कंस की रंगभूमि के बाहर कृष्ण ने कुवलयापीड नामक हाथी को मारा, फिर रंगभूमि में प्रविष्ट होकर चाणूर से बातें कीं। चवालीसवें अध्याय में ५१ श्लोक हैं जिनमें कृष्ण तथा बलराम द्वारा चाणूर तथा मुष्टिक नामक मल्लों के मारे जाने और इसके बाद कंस तथा उसके आठों भाइयों के मारे जाने का वर्णन हुआ है। किन्तु कृष्ण ने कंस की पत्नियों तथा अपने माता-पिता देवकी तथा वसुदेव को सान्त्वना दी।

पैंतालीसवें अध्याय में ५० श्लोक हैं। इसमें कृष्ण द्वारा अपने माता-पिता को सान्त्वना देने और अपने नाना उग्रसेन के सिंहासनारूढ़ कराने का वर्णन है। वृन्दावनवासियों को यह वचन देने के बाद कि वे शीघ्र ही वृन्दावन लौटेंगे, कृष्ण का क्षत्रिय-संस्कार सम्पन्न हुआ। वे ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर गुरुकुल में रहे जहाँ उन्होंने नियमित रूप से अध्ययन किया। पञ्चजन नामक असुर का वध करने पर उन्हें पाञ्चजन्य शंख प्राप्त हुआ। कृष्ण ने अपने गुरु-पुत्र को यमराज के पाश से छुड़ाकर गुरु को लाकर सौंपा। इस तरह गुरु का ऋण उतारने के लिए गुरु-दक्षिणा देकर भगवान् कृष्ण मथुरापुरी लौट आये। छियालीसवें अध्याय में ४९ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण ने अपने माता-पिता, यशोदा तथा नन्द महाराज को ढाढ़स बँधाने के उद्देश्य से उद्धव को वृन्दावन भेजा। सैंतालीसवें अध्याय में ६९ श्लोक हैं जिनमें कृष्ण के आदेशानुसार उद्धव गोपियों को सान्त्वना देने जाते हैं और तब मथुरा लौट आते हैं। इस तरह उद्धव को वृन्दावनवासियों द्वारा कृष्ण के लिए अनुभूत परम आनन्ददायक प्रेम का पता चलता है।

अड़तालीसवें अध्याय में ३६ श्लोक हैं। इसमें बतलाया गया है कि कृष्ण ने किस प्रकार कुब्जा के

घर जाकर उसकी इच्छा पूरी की। इसके बाद कृष्ण अक्रूर के घर गये। अक्रूर की प्रार्थनाओं से प्रसन्न होकर उसकी प्रशंसा की और पाण्डवों का समाचार लाने के लिए उसे हस्तिनापुर भेज दिया। उच्चासवें अध्याय में ३१ श्लोक हैं। इसमें बताया गया है कि अक्रूर कृष्ण का आदेश पाकर हस्तिनापुर गया जहाँ उसने विदुर तथा कुन्ती से भेंट की और उनसे पाण्डवों के साथ धृतराष्ट्र द्वारा किये गये दुर्व्यवहार के बारे में सुना। कृष्ण के प्रति पाण्डवों की श्रद्धा से परिचित होने पर उसने धृतराष्ट्र को उचित सलाह दी और फिर धृतराष्ट्र के मन की बात जानकर मथुरा लौट आया। यहाँ उसने हस्तिनापुर की स्थिति का सारा समाचार कह सुनाया।

पचासवें अध्याय में ५७ श्लोक हैं। इसमें जरासन्ध द्वारा मथुरा पर आक्रमण करने का उल्लेख है। जब जरासन्ध ने सुना कि उसका दामाद कंस मारा गया तो उसने राम तथा कृष्ण को मार डालने के लिए मथुरा पर आक्रमण कर दिया, किन्तु उसे सत्रह बार मुँह की खानी पड़ी। जब अठारहवीं बार जरासन्ध मथुरा पर आक्रमण करने वाला था, तो नारद के कहने से कालयवन ने भी मथुरा पर धावा बोल दिया। इस तरह यादववंश जल के बीच बने किले में प्रविष्ट हुआ और योगशक्ति द्वारा वहाँ रहा। यादववंश की सुरक्षा का प्रबन्ध करके तथा बलदेव से परामर्श करने के बाद भगवान् कृष्ण द्वारका से बाहर आये। अध्याय इक्यावन में ६३ श्लोक हैं जिसमें मुचकुन्द द्वारा मात्र दृष्टिपात करने से कालयवन के मारे जाने का उल्लेख मिलता है।

अध्याय बावन में ४४ श्लोक हैं। इस अध्याय में मुचकुन्द कृष्ण की स्तुति करता है और कृष्ण कालयवन के सारे सैनिकों को मारकर उनके द्वारा लूटी हुई सारी सामग्री लेकर द्वारका लौट आते हैं। जब जरासन्ध फिर से मथुरा पर आक्रमण करता है, तो राम तथा कृष्ण भगकर पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाते हैं मानो डर गये हों जिसके बाद जरासन्ध पर्वत में आग लगा देता है। जरासन्ध के देखे बिना कृष्ण तथा बलराम पर्वत की चोटी से नीचे कूदकर द्वारका पहुँचते हैं, जो चारों ओर से समुद्र से घिरा है। जरासन्ध समझता है कि वे दोनों मर गये हैं अतः वह अपनी सेना लेकर अपने देश लौट जाता है और कृष्ण द्वारका में रहने लगते हैं। विदर्भराज की कन्या रुक्मिणी कृष्ण के प्रति अत्यधिक आकृष्ट थी। उसने एक ब्राह्मण के हाथ कृष्ण के पास एक पत्र भेजा। अध्याय तिरपन में ५७ श्लोक हैं। रुक्मिणी की विनती पर कृष्ण विदर्भ जाकर जरासन्ध जैसे शत्रुओं की उपस्थिति में रुक्मिणी का हरण

कर लाते हैं। अध्याय चौवन, जिसमें ६० श्लोक हैं बतलाता है कि कृष्ण ने सारे विपक्षी राजकुमारों को हराकर रुक्मिणी के भाई रुक्मी को कुरूप बना दिया। फिर वे रुक्मिणी समेत द्वारका लौट आये जहाँ आकर उन दोनों ने औपचारिक विवाह कर लिया। किन्तु रुक्मी अपने बहनोई कृष्ण से क्रुद्ध होकर भोजकट नामक स्थान में रहने लगा। पचपनवें अध्याय में ४० श्लोक हैं जिसमें प्रद्युम्न-जन्म, शम्बरासुर द्वारा प्रद्युम्न-अपहरण तथा बाद में किस तरह प्रद्युम्न के द्वारा शम्बरासुर वध और अपनी पत्नी रति देवी के साथ द्वारका लौट आने का वर्णन मिलता है।

छप्पनवें अध्याय में ४५ श्लोक हैं। इसमें बतलाया गया है कि किस तरह सूर्यदेव की कृपा से राजा सत्राजित को स्यमंतक मणि की प्राप्ति हुई। बाद में यह मणि चोरी चली गयी तो सत्राजित को कृष्ण पर व्यर्थ ही सन्देह हुआ, किन्तु कृष्ण ने अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए उस मणि को पुनः प्राप्त किया और साथ में जाम्बवान की पुत्री को भी। बाद में कृष्ण ने सत्राजित की पुत्री से विवाह किया और प्रचुर दहेज प्राप्त किया। सत्तावनवें अध्याय में, जिसमें ४२ श्लोक हैं, बतलाया गया है कि पाण्डवों के लाक्षागृह में अग्निकाण्ड की घटना सुनने के बाद बलराम तथा कृष्ण दोनों हस्तिनापुर गये। जब अक्रूर तथा कृतवर्मा के बहकावे में आकर शतधन्वा द्वारा सत्राजित मारा गया तो बलराम और कृष्ण द्वारका लौट आये। स्यमन्तक मणि को अक्रूर के पास छोड़कर शतधन्वा जंगल की ओर भाग गया। इस तरह शतधन्वा का वध करके भी कृष्ण स्यमन्तक मणि नहीं पा सके। अन्त में मणि ढूँढ़ निकाली गयी और अक्रूर को दे दी गयी। अट्ठावनवें अध्याय में ५८ श्लोक हैं। जब पाण्डवों का अज्ञातवास समाप्त हुआ तो कृष्ण उनसे भेंट करने इन्द्रप्रस्थ गये। इसके बाद उन्होंने कालिन्दी आदि पाँच पत्नियों से विवाह किया। जब कृष्ण तथा अर्जुन ने खाण्डववन में आग लगा दी तो अर्जुन को गाण्डीव धनुष प्राप्त हुआ। मयदानव असुर ने पाण्डवों के लिए सभा भवन बनाया। इससे दुर्योधन अत्यन्त व्यथित हो गया।

उनसठवें अध्याय में ४५ श्लोक हैं। इस अध्याय में कृष्ण ने इन्द्र की प्रार्थना पर साक्षात् पृथ्वी के पुत्र नरकासुर तथा मुर इत्यादि उसके असुर संगियों का वध किया। साक्षात् पृथ्वी ने कृष्ण की प्रार्थना की और नरकासुर द्वारा चुराई हुई सारी वस्तुएँ लाकर कृष्ण को लौटा दीं। तब कृष्ण ने नरकासुर के पुत्र को अभयदान दिया और नरकासुर द्वारा बन्दी बनाई गई सोलह हजार राजकुमारियों के साथ अपना

विवाह किया। इसी अध्याय में कृष्ण स्वर्ग से पारिजात पौधा लाते हैं तथा इन्द्र आदि की मूर्खता का भी इसी में उल्लेख मिलता है।

साठवें अध्याय में ५९ श्लोक हैं। कृष्ण अपने परिहास से रुक्मिणी को क्रुद्ध करते हैं, दोनों के बीच प्रेम-कलह होता है और रुक्मिणी को कृष्ण मनाते हैं। इकसठवें अध्याय में ४० श्लोक हैं। इसमें कृष्ण के पुत्रों-पौत्रों का वर्णन हुआ है। अनिरुद्ध के विवाह के समय बलराम रुक्मी का वध करते हैं और कलिंगराज के दाँत तोड़ते हैं।

बासठवें अध्याय में ३३ श्लोक हैं। इस अध्याय का शुभारम्भ बाणासुर की पुत्री उषा के हरण की वार्ता एवं उषा तथा अनिरुद्ध के प्रेमालाप से होता है। इसमें अनिरुद्ध तथा बाणासुर के बीच युद्ध का तथा बाणासुर द्वारा अनिरुद्ध को नागपाश में बाँधे जाने का भी वर्णन हुआ है। तिरसठवें अध्याय में ५३ श्लोक हैं। इसमें बाणासुर तथा यादवों के बीच छिड़ने वाले संग्राम में शिवजी की पराजय का वर्णन हुआ है। जब रुद्रज्वर वैष्णवज्वर से हार गया तो उसने कृष्ण की प्रार्थना की। कृष्ण ने बाणासुर की हजार भुजाओं में से केवल चार भुजाएँ छोड़कर और शेष सभी को काट कर उस पर कृपा की। तत्पश्चात् वे उषा तथा अनिरुद्ध को साथ लेकर द्वारका लौट आये।

चौंसठवें अध्याय में ४४ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण इक्ष्वाकुपुत्र राजा नृग का शाप से उद्धार करते हैं और सभी राजाओं को उपदेश देते हैं कि ब्राह्मण की सम्पत्ति का हरण-करण एक दोष है। राजा नृग के उद्धार के प्रसंग में उन यादवों के लिए भी आदेश हैं, जो सम्पत्ति-भोग ऐश्वर्य, विलास इत्यादि के कारण गर्वित हो उठे थे।

अध्याय पैंसठ में ३४ श्लोक हैं। भगवान् बलदेव अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों से भेंट करने गोकुल जाते हैं। चैत और बैसाख के महीनों में यमुना के तटवर्ती कुंजों में अपनी गोपियों के साथ वे रासोत्सव तथा यमुना-कर्षण लीलाएँ सम्पन्न करते हैं।

छियासठवें अध्याय में ४३ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण काशी जाते हैं और वहाँ पौण्ड्रक तथा उसके मित्र काशी नरेश सुदक्षिण तथा अन्यो का वध करते हैं। अध्याय सड़सठ में २८ श्लोक हैं जिनमें रैवतक पर्वत में अनेक युवतियों के साथ बलदेवजी द्वारा भोग-विलास करने एवं मैन्द के भाई तथा नरकासुर के मित्र द्विविद नामक उपद्रवी लंगूर के मारे जाने का वर्णन मिलता है।



अध्याय अड़सठ में ५४ श्लोक हैं जिसमें जाम्बवती के पुत्र साम्ब द्वारा दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा के हरण एवं कौरवों से युद्ध करते हुए उसके बन्दी बनाये जाने का उल्लेख है। उसे छुड़ाने तथा शान्ति स्थापित किये जाने के लिए भगवान् बलदेव एक शुभचिन्तक के रूप में हस्तिनापुर जाते हैं किन्तु कौरवगण असहयोग दिखलाते हैं अतः उनके अहंकार को देखकर भगवान् बलराम अपने हल से हस्तिनापुर को खींचने लगते हैं। इस पर दुर्योधन समेत सारे कौरव बलदेव की स्तुति करते हैं और वे साम्ब तथा लक्ष्मणा समेत द्वारका लौट जाते हैं।

उनहत्तरवें अध्याय में ४५ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण अपनी सोलह हजार रानियों के साथ गृहस्थ-जीवन बिताते हैं। महर्षि नारद तक को आश्चर्य होता है कि कृष्ण किस प्रकार सोलह हजार रूपों में विस्तारित होकर गृहस्थ-जीवन बिताते हैं। फलतः नारद भी कृष्ण की स्तुति करते हैं जिससे कृष्ण उन पर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

सत्तरवें अध्याय में ४७ श्लोक हैं जिनमें कृष्ण के दैनिक कर्मकाण्ड तथा जरासंध द्वारा बन्दी बनाये गये राजाओं को मुक्त किये जाने का वर्णन हुआ है। जब भगवान् कृष्ण इन राजाओं द्वारा भेजे गये दूत से भेंट कर रहे थे तभी नारद ने आकर पाण्डवों की जानकारी दी। उन्होंने कृष्ण को बताया कि पाण्डव लोग राजसूय यज्ञ करना चाहते हैं, तो कृष्ण ने उसमें सम्मिलित होने की हामी भर दी, किन्तु उन्होंने पहले उद्धव का निर्णय जानना चाहा कि क्या राजा जरासन्ध के वध को प्राथमिकता दी जाय या राजसूय यज्ञ सम्पन्न कराने को। इकहत्तरवें अध्याय में ४५ श्लोक हैं जिसमें कृष्ण के इन्द्रप्रस्थ पहुँचने पर पाण्डवों की प्रसन्नता का वर्णन हुआ है। कृष्ण की अकल्पनीय इच्छा थी कि जरासन्ध का वध हो और महाराज युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ भी सम्पन्न करें।

बहत्तरवें अध्याय में ४६ श्लोक हैं। कृष्ण द्वारा राजसूय यज्ञ सम्पन्न कराने की स्वीकृति दिये जाने पर महाराज युधिष्ठिर अत्यधिक प्रसन्न हुए। इस अध्याय में जरासन्ध के वध, उसके पुत्र का सिंहासन पर बैठना तथा जरासन्ध द्वारा कैदी बनाये गये राजाओं की मुक्ति का भी वर्णन हुआ है। तिहत्तरवें अध्याय में ३५ श्लोक हैं। जब कृष्ण ने राजाओं को छुड़ा दिया और उन्हें अपनी राजसत्ता मिल गई तो जरासन्ध के पुत्र सहदेव ने कृष्ण की पूजा की और कृष्ण भीम तथा अर्जुन समेत इन्द्रप्रस्थ लौट आये। चौहत्तरवें अध्याय में ५४ श्लोक हैं। महाराज युधिष्ठिर ने कृष्ण की स्तुति की और राजसूय यज्ञ में

उनकी अग्रपूजा की। भगवान् को इस प्रकार सम्मान देना प्रत्येक मनुष्य का सर्वोपरि कर्तव्य है, किन्तु चेदि नरेश शिशुपाल के लिए यह असह्य था। वह कृष्ण की निन्दा करने लग पड़ा। अतः कृष्ण ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया और उसे सारूप्य मुक्ति प्रदान की। राजसूय यज्ञ के समाप्त होने के बाद कृष्ण अपनी रानियों समेत द्वारका लौट आये। पचहत्तरवें अध्याय में ४० श्लोक हैं। इसमें राजसूय यज्ञ सम्पन्न होने के बाद युधिष्ठिर द्वारा अन्तिम स्नान-कर्म सम्पन्न किये जाने का वर्णन है। दुर्योधन मय दानव द्वारा बनाये गये राजमहल को देखकर मोहित हो गया फलतः उसने अपने को अपमानित हुआ समझा।

छिहत्तरवें अध्याय में ३३ श्लोक हैं। इसमें रुक्मिणी का हरण करते समय कृष्ण द्वारा हराये गये राजा साल्व के संकल्प का वर्णन हुआ है कि किस प्रकार उसने संसार से यादवों का विनाश करने का निर्णय किया। यादवों को हराने के लिए उसने शिवजी की पूजा की जिन्होंने उसे सौभ नामक विमान दिया। जब साल्व वृष्णियों से युद्ध कर रहा था, तो प्रद्युम्न ने मय दानव द्वारा निर्मित विमान को चकनाचूर कर दिया, किन्तु साल्व के भाई द्युमान ने उस पर आक्रमण कर दिया। उसकी गदा से चोट खाकर बेहोश हुए प्रद्युम्न को उसका सारथी युद्ध-स्थल से कुछ दूर तक ले आया, किन्तु बाद में उसे पश्चात्ताप हुआ कि उसे युद्ध-स्थल से दूर क्यों ले जाया गया। सतहत्तरवें अध्याय में ३७ श्लोक हैं। इसमें प्रद्युम्न होश आने पर साल्व से फिर युद्ध करता है। इन्द्रप्रस्थ से द्वारका लौटने पर तुरन्त ही कृष्ण युद्ध-स्थल पर पहुँचे जहाँ प्रद्युम्न और साल्व युद्ध कर रहे थे। वहाँ कृष्ण ने साल्व का वध कर डाला यद्यपि वह मायाजनित अस्त्रों को धारण किये था।

अठहत्तरवें अध्याय में ४० श्लोक हैं। इसमें साल्व का मित्र दन्तवक्र तथा उसका भाई विदूरथ कृष्ण द्वारा मारे जाते हैं। कौरवों तथा पाण्डवों के युद्ध में भाग लेने के बजाए बलदेव जो द्वारकापुरी में रह रहे थे, तीर्थ-भ्रमण करने चले जाते हैं। नैमिषारण्य में रोमहर्षण के दुर्व्यवहार के कारण बलदेव उसे मारकर उसके पुत्र उग्रश्रवा अर्थात् सूत गोस्वामी को *श्रीमद्भागवत* का वाचक नियुक्त करते हैं जिससे पुराणों पर प्रवचन चलता रहे। उन्वासीवें अध्याय में ३४ श्लोक हैं। इसमें नैमिषारण्य के ब्राह्मणों द्वारा बलदेव को रोमहर्षण की मृत्यु के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए कहा जाता है। बल्लल नामक असुर को मारने के बाद बलदेव यात्रा करते रहे और तीर्थस्थानों में स्नान करते हुए अन्ततः कुरुक्षेत्र की

युद्धभूमि पहुँचे, जहाँ भीम तथा दुर्योधन लड़ रहे थे। तत्पश्चात् वे द्वारका लौट आये और एक बार फिर नैमिषारण्य गये जहाँ उन्होंने ऋषियों को उपदेश दिया। तत्पश्चात् वे अपनी पत्नी रेवती समेत वहाँ से चले गये।

अध्याय अस्सी में ४५ श्लोक हैं जिनमें बतलाया गया है कि किस तरह कृष्ण का मित्र विप्र सुदामा कृष्ण के पास धन माँगने आया और कृष्ण द्वारा पूजित हुआ। कृष्ण ने गुरुकुल में अपने बाल्यकाल के संस्मरण सुनाये। इक्यासीवें अध्याय में ४१ श्लोक हैं। इसमें कृष्ण तथा उनके मित्र सुदामा के बीच मैत्री की बातों का उल्लेख मिलता है। कृष्ण ने सुदामा विप्र से चावल की भेंट बड़े हर्ष सहित स्वीकार की। जब सुदामा विप्र अपने घर लौटा तो उसे वहाँ हर वस्तु ऐश्वर्यपूर्ण दिखी। फलतः उसने भगवान् की मित्रता की सराहना की। उसने भगवान् द्वारा दी गई भेंट से भौतिक ऐश्वर्य का भोग किया और बाद में भगवद्भाम गया।

बयासीवें अध्याय में ४८ श्लोक हैं। इसमें यादवों द्वारा सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र जाने तथा वहाँ अन्य राजाओं द्वारा कृष्ण के विषय में बातें करने का वर्णन मिलता है। इस भेंट में कृष्ण ने नन्द महाराज तथा वहाँ आये वृन्दावनवासियों को तुष्ट किया। तिरासीवें अध्याय में ४३ श्लोक हैं जिसमें कुरुक्षेत्र में एकत्र हुई स्त्रियों के बीच कृष्ण की बातें चलने तथा द्रौपदी द्वारा कृष्ण की रानियों से उनके विवाह की बात पूछने का वर्णन हुआ है। चौरासीवें अध्याय में ७१ श्लोक हैं। जब बड़े-बड़े ऋषिमुनि कृष्ण का दर्शन करने कुरुक्षेत्र आये तो कृष्ण ने उन सबकी बड़ी प्रशंसा की। इस अवसर पर वसुदेव बहुत बड़ा यज्ञ करना चाह रहे थे अतएव ऋषियों ने सलाह दी कि कृष्ण की पूजा की जाय। यज्ञ सम्पन्न होने पर वहाँ आये समस्त जन अपने-अपने घरों को चले गये। पचासीवें अध्याय में ५९ श्लोक हैं। कृष्ण ने अपनी माता-पिता के अनुरोध पर अपनी कृपा से उनके मृत पुत्रों को लौटा दिया और उन सबका उद्धार हो गया। छियासीवें अध्याय में भी ५९ श्लोक हैं। इस अध्याय में महान् युद्ध के पश्चात् अर्जुन द्वारा सुभद्रा-हरण का वर्णन हुआ है। इसमें यह भी बतलाया गया है कि किस प्रकार कृष्ण अपने भक्त बहुलाश्व पर कृपा करने मिथिला गये और श्रुतदेव के मकान पर ठहरे तथा उनकी आध्यात्मिक प्रगति के विषय में उपदेश दिया।

सत्तासीवें अध्याय में ५० श्लोक हैं जिसमें वेदों द्वारा नारायण की स्तुति का वर्णन है। अट्ठासीवें

अध्याय में ४० श्लोक हैं जिनमें यह बतलाया गया है कि किस प्रकार विष्णु की पूजा करके वैष्णवजन दिव्य बनते हैं और भगवद्धाम वापस जाते हैं। देवताओं की पूजा से भौतिक शक्ति भले मिलती हो, किन्तु इस अध्याय में बतलाया गया है कि किस तरह इस भौतिक जगत में सामान्य जीव पर श्रीकृष्ण की कृपा हो सकती है। इस तरह ब्रह्मा तथा शिव के ऊपर भगवान् विष्णु की श्रेष्ठता स्थापित होती है। नवासीवें अध्याय में ६५ श्लोक हैं जिनमें यह उद्धाटित हुआ है कि भौतिक अर्चाविग्रहों में कौन सर्वश्रेष्ठ है। यद्यपि विष्णु त्रिदेवों—ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर—में से एक हैं किन्तु वे दिव्य तथा सर्वोच्च हैं। इसी अध्याय में इसका भी वर्णन मिलता है कि कृष्ण तथा अर्जुन द्वारका के किसी ब्राह्मण-पुत्र का उद्धार करने महाकालपुर गये और किस तरह अर्जुन अचम्भित हुए। नब्बेवें अध्याय में ५० श्लोक हैं। इसमें कृष्ण की लीलाओं का सारांश दिया गया है और *मधुरेण समापयेत्* का तर्क प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि हर बात दिव्य आनंद में अच्छी तरह समाप्त होती है।